मिट्टी के स्वास्थ्य के लिए जैव इनपुट

इस प्लेबुक की
क्या आवश्यकता है?

- खेती का उत्पादन और मिट्टी के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए किसान अक्सर अजैविक, केमिकल-भरे रासायनिक खाद उपयोग करते हैं।
- इससे किसानों और खेती के उत्पाद खाने वालों के स्वास्थ्य पर दीर्घकालीन प्रभाव पड़ता है।
- इससे मिट्टी में मौजूद लाभकारी बैकटीरिया और सूक्ष्म जीव खत्म हो जाते हैं और मिट्टी के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है।
- इससे इन रसायनो के दुरुपयोग या ज़रूरत से ज़्यादा उपयोग को भी बढ़ावा मिलता है और किसान इन रसायनो के चक्र पर निर्भर हो जाते हैं, जो किसानों के लिए महंगा पड़ता है।

यह समाधान
किन स्थितियों में अपनाया जा सकता है:

- आप छोटे/सीमांत किसान हैं।
- आपके पास व्यंजनों में उल्लिखित कच्चे माल और सामग्री हैं।
- आपके पास तैयार करने और स्टोर करने के लिए पर्याप्त जगह है।

यह प्लेबुक किसके काम आ सकती है: प्रशिक्षक, सामुदायिक संसाधन व्यक्ति (सी.आर.पी.)

यह प्लेबुक **ट्रस्ट कम्यूनिटी लाइव्लीहुड्स (टी.सी.एल)** की विशेषज्ञता पर आधारित है, जो कि उत्तर प्रदेश के बाराबंकी और बाहराइच जिलों में सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समुदायों और भूमिहीन/ सीमांत किसानों के बीच आमदनी बढ़ाने का काम करती है।

जैविक सामग्री के उपयोग से किसानों को क्या फायदे हैं ?

जैविक सामग्री के उपयोग से किसानों को क्या फायदे हैं ?

समाधान

जैविक सामग्री बनाना और मिट्टी के स्वास्थ्य और पोषण के लिए उसके उपयोग को बढ़ावा देना

01 काऊ पैट पिट (सी.प.प.)

गड्ढा बनाना

ऐसी जगह चुनें जहां पानी ठहरता न हो, छाँव हो और हवा हो। जैसे कि, घर के छज्जे या पेड़ के नीचे। इससे गर्मी में गड्ढा ठंडा रहता है और गड्ढे में बारिश का पानी नहीं भरता

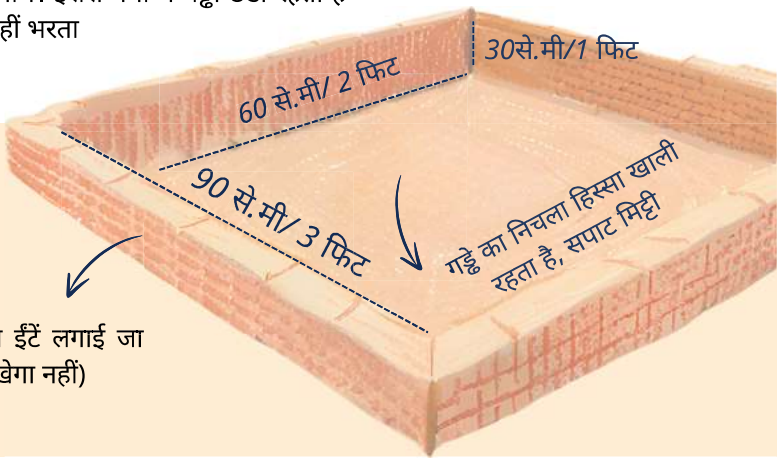

गड्ढे के किनारों पर गीली ईंटें लगाई जा सकती हैं (इससे गोबर सूखेगा नहीं)

गड्ढे को भरना

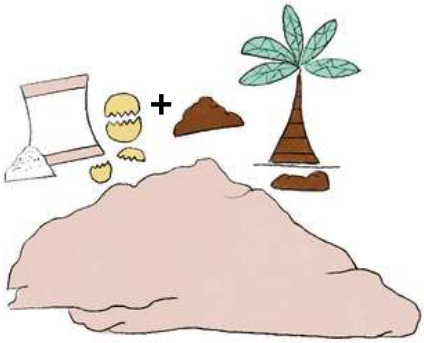

1. 65 किलो गोबर इकट्ठा करें (यह गौमूत्र के साथ भी मिलाया जा सकता है)। पानी छिड़कें जिससे कि गोबर न ज़्यादा सूखा हो न ज़्यादा गीला।

2. इसमें 200 ग्राम चूना या अंडे के छिलके मिलाएँ, 200 ग्राम बसाल्ट डस्ट या बोरवेल की मिट्टी या पीपल/ बड़ के पेड़ की नीचे की मिट्टी।

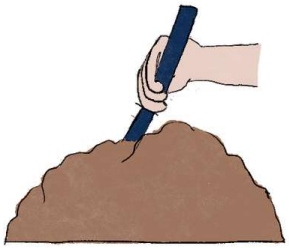

3 गोबर को अच्छे से मिलाएँ, जिससे उसमें हवा जाए और फिर उसे गड्ढे में डाल दें।

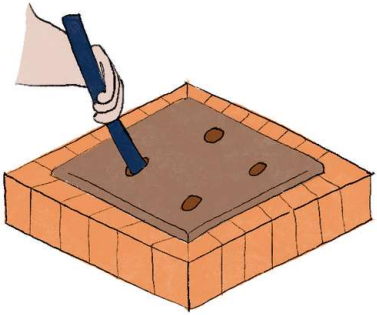

4 इस मिश्रण को हल्के से दबाएँ और ऊपर से समतल कर दें । चार-पाँच छेद बनाएँ, लगभग 4 से.मी. के।

5 हर छेद में **बी.डी. 502-507** डालें।

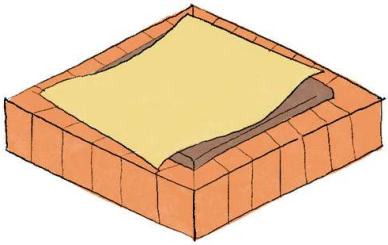

6 इस गोबर के गड्ढे को गीली जूट की बोरी से ढँक दें जिससे की नमीं बनी रहे।

काऊ पैट पिट का रखरखाव

खाद बनने का कुल समय 90 दिन

ध्यान दें कि जूट की बोरी हमेशा गीली रहे (2-3 दिन में उस पर पानी छिड़कते रहें)।

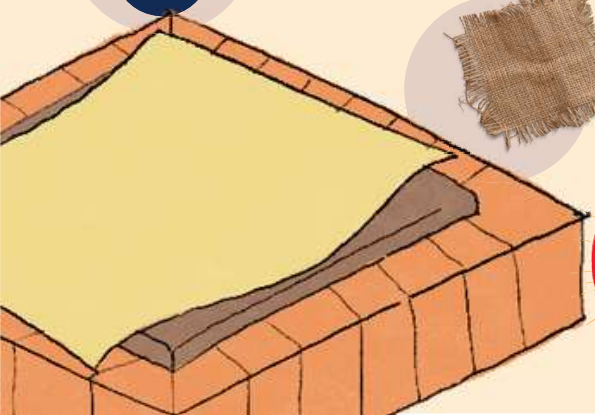

1 महीने के बाद पूरे मिश्रण को बाहर निकालें और अच्छी तरह से मिलाएँ। वापस गड्ढे में डाल दें । फिर, इस मिश्रण को हर 15 दिन में बाहर निकाल कर मिलाएँ।

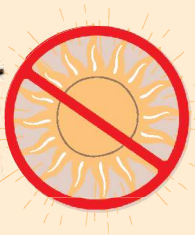

इसे छाँव में 1 हफ्ता सुखाने के बाद उपयोग करें।

परिणाम

90-125 दिन के बाद परिणाम दिखता है - यदि माना गया कि गर्मी के मौसम में 30-40 डिग्री तापमान और 60-70% नमीं का वातावरण रहा होगा: **25 किलो समृद्ध खाद**

उपयोग कैसे करें

1. 2 किलो समृद्ध खाद, 500 किलो आम खाद में मिलाकर 1 एकड़ ज़मीन में डाली जा सकती है।

2. **ठोस रूप में उपयोग:** आखरी बार हल चलाते समय (मिट्टी में बीज डालने से पहले) खाद को मिट्टी के साथ मिला दें।

3. **तरल रूप में उपयोग:** प्रति एकड़ के लिए 5 किलो सी.पी.पी. को 40 लीटर पानी में मिलाकर फोलिएर स्प्रे के माध्यम से ज़मीन पर छिड़क दें । घोल को शाम के समय छिड़कना चाहिए।

02 समृद्ध फार्म यार्ड खाद

प्राकृतिक खाद (गोबर) या कीड़ा खाद की गुणवत्ता बेहतर बनाती है।

अतिरिक्त आवश्यक सामग्री और तरीका

अच्छी तरह से मिश्रण करें और उपयोग करें

200 ग्राम
ट्राईकोडर्मा (पाउडर या तरल)

2 - 5 किलो
नीम खली (पाउडर)

1 क्विंटल
फार्म यार्ड खाद (गोबर या कीड़ा खाद)

उपयोग

1

आखरी बार हल चलाते समय मिट्टी में मिलाएँ (बीज डालने से ठीक पहले)।

2

शाम के समय में करना बेहतर होता है।

लाभ

मिट्टी में पोषक तत्वों को बढ़ाता है

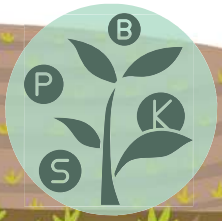

फफूंद बढ़ने से रोकता है

03 जीवामृत

जिन जगहों पर ताजा गोमूत्र इकट्ठा किया जा सकता है, वहाँ सी.पी.पी. के विकल्प में उपयोग किया जा सकता है।

बनाने का तरीका

100 लीटर
पानी

10 किलो
गोबर

10 लीटर
गो मूत्र

1 किलो
बरगद/पीपल के नीचे की मिटटी

लकड़ी के डंडे से अच्छे से मिलाएँ

2 किलो
गुड़

2 किलो
बेसन / दाल का आटा

इस मिश्रण को अच्छे से मिलाकर छाँवदार जगह पर रखें

इस मिश्रण को दिन में तीन बार मिलाएँ और 5-7 दिन तक सड़ने दें

उपयोग

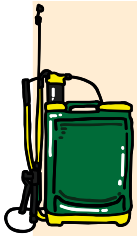

1

इसे मिट्टी पर छिड़का जा सकता है या सिंचाई के पानी में मिलाया जा सकता है।

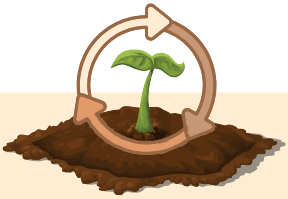

2

एक फ़सल की अवधि के दौरान इसे 3 बार लगाया जाना चाहिए: बीज डालने से पहले, बीज डालने के 20 दिन बाद और तीसरी बार, बीज डालने के 45 दिन बाद।

आपको क्या लगता ह पापा? क्या यह काम का ह?
हा, यह तो काफ़ी आसान लगता ह। क्या हम कीटनशाकों का उपयोग भी कम कर सकत ह?

संसाधन व्यक्ति

डॉ . सुनील कुमार पांडे
कार्यक्रम निर्देशक, टी.सी.एल
९६५१०७२८०२

रविंद्रनाथ शुक्ला
कार्यक्रम निर्देशक, टी.सी.एल
८२९९२९६०४९

Documentation Partner

WELL LABS
WATER · ENVIRONMENT · LAND · LIVELIHOODS

Knowledge Partner

TRUST Community Livelihoods
Creating wealth for the poor
TCL

Supported by

AXIS BANK FOUNDATION

नवंबर २०२५